सांस्कृतिक समृद्धि की प्रतीक है हिंदी

पूर्वी व पूर्वोत्तर क्षेत्र के हिंदी अधिकारियों के सम्मेलन में बोले राज्यपाल

कोलकाता. राष्ट्रीय आंदोलन की सबसे सशक्त भाषा के रूप में हिंदी का योगदान है. यह जनमानस की भाषा है. यह हमारी सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है. यह राष्ट्रप्रेम और स्वाभिमान की भावना को जागृत करने में सक्षम है. मंगलवार को नेशनल लाइब्रेरी के ऑडिटोरियम में पूर्वी तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र के हिंदी अधिकारियों के सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में पश्चिम बंगाल के राज्यपाल केशरी नाथ त्रिपाठी ने उक्त बातें कहीं. इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने विभिन्न सरकारी तथा सार्वजनिक उपक्रमों के अधिकारियों को हिंदी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए पुरस्कार प्रदान कर उनका उत्साहवर्द्धन भी किया.

इस अवसर पर 'राजभाषा भारती' नामक पत्रिका के 141 वें अंक का भी उन्होंने विमोचन किया. इसके अलावा हिंदी के अभिनव प्रयोग तथा भाषायी अभिव्यक्ति के लिए राजभाषा से संबंधित सामग्री की एक सीडी का भी विमोचन किया गया. साथ ही प्रदीप चतुर्वेदी द्वारा संपादित यूको बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका 'अनुगूंज' का भी उनके हाथों विमोचन हुआ.

इस अवसर पर राजभाषा विभाग की संयुक्त सचिव पूनम जुनेजा, राजभाषा के निदेशक (कार्यान्वयन) हरेंद्र कुमार, नेशनल लाइब्रेरी के महानिदेशक पीवाइ राजेंद्र कुमार, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक डॉ जयप्रकाश कदम, हिंदी शिक्षण संस्थान के उपनिदेशक जितेंद्र प्रसाद, हिंदी अधिकारी सतीश पांडये भी उपस्थित थे.

सन्मार्ग
बंगाल
06
गुरुवार । 19 फरवरी, 2015 । कोलकाता

भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग की ओर से आयोजित पूर्व तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रों के राजभाषा सम्मेलन में पत्रिका का लोकार्पण करते राज्यपाल केसरीनाथ त्रिपाठी व अन्य

व्यावहारिक भाषा पर जोर दिया जाये : राज्यपाल

कोलकाता : राज्यपाल **केशरीनाथ त्रिपाठी** ने बुधवार को कहा कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर जोर देने की आवश्यकता है। व्यावहारिक हिंदी पर जोर दिया जाना चाहिए। जितना हो सके कठिन हिन्दी के प्रयोग से बचें। प्रयोजनमूलक हिन्दी ज्यादा सहज और ग्राह्य है।

ये बातें उन्होंने बुधवार को भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र के 12 राज्यों के राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान कहीं। बतौर मुख्य अतिथि मौजूद राज्यपाल ने केंद्र सरकार से अपील की कि सरकार के गाइडलाइंस व योजनाओं की जानकारी हिन्दी में उपलब्ध होनी चाहिए। उन्होंने विदेशों में भी हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने की बातें कहीं। राज्यपाल द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रयोग में सर्वश्रेष्ठ प्रगति हासिल करने वाले पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को पुरस्कृत किया गया।

पूनम जुनेजा, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में पी.वाई. राजेन्द्र कुमार, हरिन्द्रम कुमार, डॉ. जयप्रकाश कर्दम, आलोक श्रीवास्तव,राजपाल सिंह काहलों उपस्थित थे। पी. वाई. राजेन्द्र कुमार महानिदेशक, नेशनल लाइब्रेरी ने कहा कि नेशनल लाइब्रेरी का काम माइक्रोफिल्म सामग्री व सभी पांडुलिपियों का संरक्षण करना है। सामान्य एवं क्षेत्रीय सामग्री के आधार पर इसमें भारतवर्ष के विभिन्न पुस्तकालयों पर सामग्री तैयार करते हैं। पुनम जुनेजा ने कहा कि हिंदी भाषा और साहित्य को राष्ट्रीय मंच पर लाने में आचार्य केशवचंद्र सेन, रवीन्द्र नाथ टैगोर, सुभाष चंद्र बोस जैसे बंगाली महानुभावों का योगदान अप्रतिम है। इस मौके पर अतुल सिन्हा, निर्मल कुमार दूबे समेत अन्य लोग मौजूद थे।

कानून व्यवस्था पर जतायी चिंता

कोलकाता : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के राष्ट्रीय सचिव श्रीहरि बोरीकर ने कल्याणी विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर के इस्तीफे की मांग पर चलाये जा रहे आंदोलन पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य में कानून-व्यवस्था की स्थिति चिंताजनक हो गयी। इस विषय पर जल्द ही केंद्रीय गृह मंत्री राजनाथ सिंह से मुलाकात करेंगे। ये बातें उन्होंने बुधवार को मौलाली युवा केंद्र में आयोजित एबीवीपी के सम्मेलन में कहीं।

दैनिक विश्वमित्र
■ कोलकाता
बृहस्पतिवार
१९ फरवरी २०१५

पृष्ठ 5
दैनिक विश्व
19.02.2

राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी राष्ट्रीय पुस्तकालय में आयोजित पूर्व व पूर्वोत्तर क्षेत्र राजभाषा सम्मेलन में ट्राफी प्रदान करते हुए। साथ में हैं पूनम जुनेजा। – विश्वमित्र

हिन्दी के विकास के बगैर देश का विकास अधूरा है : राज्यपाल

कोलकाता १८ फरवरी (नि.प्र.)। जब तक पूरे देश में भाषायी एकता नहीं होगी राष्ट्र का पूर्ण विकास नहीं हो सकता है। हिन्दी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की सबसे सशक्त भाषा थी। स्वराज तथा स्वदेशी की अवधारणा को धरातल पर लाने के लिए हिंदी सबसे सशक्त माध्यम है। उक्त आशय का विचार आज नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पूर्वी तथा पूर्वोत्तर राज्यों के राजभाषा सम्मेलन में पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महामहिम केशरी नाथ त्रिपाठी ने व्यक्त किया। इस अवसर पर उन्होंने विभिन्न सरकारी तथा सार्वजनिक उपक्रमों के अधिकारियों को हिंदी में उत्कष्ट कार्य करने के लिए पुरस्कार देकर उत्साहवर्धन भी किया।

इस अवसर पर राज्यपाल श्री त्रिपाठी ने अपने भाषण में हिंदी की स्थिति पर प्रकाश डालते उसकी उपयोगिता की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि नवीनतम सूचना तकनीक से हिन्दी को जोड़ना होगा तभी हिन्दी का विकास होगा। इसके साथ ही उन्होंने विभि न्न भाषाओं में अनुवाद पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि जब तक अन्य भाषाओं की पुस्तकों का हिंदी में तथा हिंदी की पुस्तकों का अन्य भाषाओं में अनुवाद नहीं होगा तबतक हिंदी का विकास धीमा रहेगा। इसके साथ ही उन्होंने साम्यवादी काल के रूस की चर्चा करते हुए कहा कि एक समय रूस ने हिन्दुस्तान में अपने साहित्य की प्रचुर पुस्तकों को सस्ते दामों पर निर्यात किया था। जिसके चलते लोगों के साहित्य चिन्तन में अंतर आया। भाषा को राष्ट्रीय स्वाभिमान से जोड़े जाने की वकालत करते हुए उन्होंने सरकारी तथा गैर सरकारी स्तर पर भी हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग करने की अपील की। विश्व हिन्दी सम्मेलन का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि आज स्थिति यह है कि जलेबी तथा समोसा जैसे शब्दों को आक्सफोर्ड जैसे शब्दकोश ने अपनाया है। हिन्दी के विकास को उन्होंने हमारी सामूहिक जिम्मेवारी बतलाया। उन्होंने कहा कि पूरे विश्व मे अपनी संस्कृति तथा ज्ञान की परम्परा को विस्तार देने के लिए हिन्दी को बढ़ावा देने की जरूरत है। इस कार्यक्रम के अन्य विशिष्ट अतिथियों में राजभाषा विभाग की संयुक्त सचिव पूनम जुनेजा क्षेत्रीय कार्यान्वयन निदेशक हरेन्द्र कुमार राष्ट्रीय पुस्तकालय के महानिदेशक पी वाई राजेन्द्रकुमार तथा हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक जयप्रकाश कदम शामिल थे। इस अवसर पर राजभाषा भारती के १४१वें अंक का विमोचन भी राज्यपाल केशरी नाथ त्रिपाठी के हाथों किया गया। इसके साथ ही राजभाषा से संबंधित एक सीडी भी जारी की गई।

राजस्थान पत्रिका

कोलकाता . गुरुवार . 19.02.2015

कोलकाता मेट्रो पत्रिका

हिन्दी सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक - केसरीनाथ

नेशनल लाइब्रेरी में आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते राज्यपाल।

कोलकाता @ पत्रिका . प्रदेश के राज्यपाल केसरीनाथ त्रिपाठी ने कहा है कि हिंदी हमारी सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है। इतिहास साक्षी है कि स्वाधीनता आंदोलन के दौरान देश को एकजुट रखने में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। देश के आम नागरिकों की भाषा ही सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को मंजिल तक पहुंचा सकती है। संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनने के लिए यह पूरी तरह सक्षम है।

बुधवार को वे नेशनल लाइब्रेरी में राजभाषा विभाग की ओर से आयोजित सम्मेलन में बोल रहे थे। इस मौके पर उन्होंने राजभाषा विभाग की त्रैमासिक गृह पत्रिका राजभाषा भारती के 141वें अंक तथा ई-बुक का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि भारत अपनी प्राचीन सभ्यता, समृद्ध भाषा एवं संस्कृति तथा गौरवशाली इतिहास के लिए दुनिया भर में विशिष्ट स्थान रखता है। वसुधैव कुटुंबकम भारत की उदार सांस्कृतिक चेतना और वैश्विक दृष्टिकोण का प्रतीक है। हमारी हिंदी इसी भाव बोध का प्रतिनिधित्व करती है। हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बन सकती है। भाषा लिपि से नहीं जानी जाती, बल्कि भाषा की पहचान उसकी प्रगतिशीलता से होती

- संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनने के लिए सक्षम

है। भारत में जरूरत है कि अंग्रेजी के बजाय हिंदी भाषा को अधिक महत्व दिया जाए। हमें किसी विदेशी भाषा के प्रति अनावश्यक आसक्ति में न बंधकर स्वाभिमान और आत्म-गौरव की भावना से हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। राज्यपाल ने कहा कि भारतीय भाषाओं और हिंदी में श्रेष्ठ साहित्यिक रचनाओं में अनुवाद का कार्य हुआ है, परंतु वह पर्याप्त नहीं है। मूल रूप से हिंदी में कामकाज को बढ़ावा देने के लिए सरल हिंदी का प्रयोग आवश्यक है अनुवाद पर निर्भर रहकर हिंदी के विकास को गति नहीं दी जा सकती। इसके लिए एक सुव्यवस्थित योजना बनाई जानी चाहिए। केन्द्र सरकार की ओर से बुधवार को राजभाषा हिंदी के प्रयोग में सर्वश्रेष्ठ प्रगति हासिल करने वाले पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को पुरस्कृत किया। यह पुरस्कार वर्ष 2013-14 में बेहतर काम करने के लिए दिया गया। *(कासं)*

कोलकाता में बुधवार को आयोजित एक कार्यक्रम में राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी।